इस्लाम के बारे में प्रचलित प्रश्नों के विश्वकोश से चुने हुए कुछ प्रश्न

(खंड : ईमान के स्तंभ)

प्रश्न संख्या : 48

इस्लाम के पाँच स्तंभ क्या हैं?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : इस्लाम के पाँच स्तंभ क्या है?

उत्तर : इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं, जिनको अल्लाह क रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इन शब्दों द्वारा बयान किया है :इस्लाम के पाँच सतंभ हैं; इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।"(सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम)

पहला स्तंभ : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। यानी उक्त दोनों बातों पर विश्वास रखना, उनके अर्थ से अवगत होना तथा इसके फलस्वरूप अल्लाह के अतिरिक्त पूजी जाने वाली अन्य चीज़ों का इनकार करना, अल्लाह की शरीयत का पालन करना, प्रेम एवं सम्मान के साथ एकमात्र अल्लाह के प्रति निष्ठावान रहना।इस बात का विश्वास रखना कि अल्लाह ही एकमात्र रब, मालिक, कायनात का संचालनकर्ता, रचयिता और जीविकादाता है तथा अल्लाह के उन सुंदर नामों एवं उच्च गुणों को साबित करना, जिनको खुद अल्लाह ने अपने लिए या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए सिद्ध किया है।यह आस्था रखना कि केवल अल्लाह ही इबादत का हक़दार है। उसके सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं है। क्योंकि रचयिता केवल वही है और इसमें उसका कोई साझी नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٞ وَلَمۡ تَكُن لَّهُۥ صَٰحِبَةٗۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ "वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उसकी संतान कैसे होगी, जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं? तथा उसी ने हर चीज़ पैदा कीया और वह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।﴿ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖ فَٱعۡبُدُوهُۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसके सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, हर चीज़ का स्रष्टा है। अतः

तुम उसी की इबादत करो तथा वह हर चीज़ का निरीक्षक है।"[सूरा अल-अनआम : 101-102]

तथा इस बात की गवाही देना कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हाशिमी, क़ुरशी अंतिम नबी और सर्वश्रेष्ट रसूल हैं। साथ ही आपकी शरीयत का पालन करना तथा शरई तरीक़े से आपका सम्मान करना और अशिष्टता एवं अतिशयोक्ति से दूर रहना।अशिष्टता यह होगी कि आपकी सुन्नत पर अमल न किया जाए और अतिशयोक्ति यह होगी कि अल्लाह के स्थान पर आपकी इबादत की जाए। मसलन आपकी क़सम खाई जाए, आपसे दुआ की जाए या इस तरह कोई दूसरा काम किया जाए, जिसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए करना जायज़ नहीं है।इस तरह इस बात का विश्वास रखना कि अल्लाह ने अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा, उनपर क़ुरआन उतारा और उनको तमाम लोगों तक इस दीन को पहुँचाने का आदेश दिया। इस बात पर विश्वास रखना कि अल्लाह और उसके रसूल से प्रेम और उनका अनुसरण करना हर व्यक्ति पर वाजिब है और अल्लाह का प्रेम उसके रसूल के अनुसरण के बिना चरितार्थ नहीं हो पाएगा।﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡۗ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ﴾ "(ऐ नबी!) कह दीजिए : यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा तथा तुम्हें तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।"[सूरा आल-ए-इमरान : 31]

आपके आदेशों का पालन करना, आपकी बताई हुई बातों की पुष्टि करना, आपकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहना और लोगों के द्वारा आविष्कृत नित नए तरीक़ों से बचते हुए आपके बताए हुए तरीक़े के अनुसार ही अल्लाह की इबादत करना वाजिब है।

रसूलों को भेजने का उद्देश्य लोगों को उन चीज़ों का मार्गदर्शन करना है, जो उनके दीन एवं दुनिया के लिए बेहतर हों और जिनसे अल्लाह पाक प्रसन्न होता हो।

दूसरा स्तंभ : नमाज़ क़ायम करना : नमाज़ कुछ विशेष कार्यों एवं कथनों द्वारा अल्लाह की इबादत करने का नाम है, जो तकबीर से शुरू होते हैं और सलाम पर संपन्न होते हैं।

दिन और रात में पाँच समय की नमाज़ें पढ़नी होती हैं। फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब एवं इशा की नमाज़।

नमाज़ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :{إِنَّ ٱلصَّلَوٰةَ كَانَتۡ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ كِتَٰبٗا مَّوۡقُوتٗا} "निःसंदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर फ़र्ज़ की गई है।"[सूरा अल-निसा : 103]

नमाज़ वास्तव में बंदे और उसके रब के बीच संबंध स्थापित करने का एक माध्यम है। तथा यह शांति एवं संतुष्टि है। नमाज़ इन्सान को बेहयाई और ग़लत कामों से रोकती है।

तीसरा स्तंभ : ज़कात देना : ज़कात एक विशेष प्रकार के धन में, विशेष समूह के लोगों के लिए, एक विशेष समय में अनिवार्य है। यह इस्लाम का एक स्तंभ है। ज़कात धनवान् से ली जाएगी और निर्धन को दी जाएगी।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿خُذۡ مِنۡ أَمۡوَٰلِهِمۡ صَدَقَةٗ تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيهِم بِهَا﴾ "आप उनके धनों में से दान लें, जिसके द्वारा आप उन्हें पवित्र और पाक-साफ़ करें।"[सूरा अल-तौबा : 103]

ज़कात धन को पाक करती है, उसमें वृद्धि करती है, मानव आत्मा को लालच एवं कंजूसी से पाक करती है और धनवानों एवं निर्धनों के बीच प्रेम भाव को सशक्त बनाती है, जिसके नतीजे में द्वेष ख़त्म होता है, शांति फैलती है और एक सफल समाज का निर्माण होता है।

चौथा स्तंभ : रमज़ान महीने के रोज़े रखना : यानी हिजरी वर्ष के नवें महीने के दिन में रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों, जैसे खाने, पीने और संभोग आदि से रुके रहना।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُۖ﴾ "रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया, जो लोगों के लिए मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्य एवं असत्य के बीच अंतर करने के स्पष्ट प्रमाण हैं। अतः तुममें से जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित हो, तो वह इसका रोज़ा रखे।"[सूरा अल-बक़रा : 185]

रोज़े की हिकमतों की बात की जाए, तो रोज़ा धर्मपरायणता का एक साधन है,

और रोज़ेदार को अल्लाह की नेमत का एहसास दिलाने का एक माध्यम है,

तथा अपने ग़रीब व निर्धन भाइयों की हालत का एहसास दिलाने का एक माध्यम है।

इसके साथ ही रोज़ा मुसलमानों को भावनात्मक रूप से एकजुट करने का काम करता है

और शरीर को स्वास्थ्य एवं शक्ति प्रदान करता है।

इनके अतिरिक्त भी रोज़े की कई अन्य हिकमतें हैं।

पाँचवाँ स्तंभ : पाँचवाँ स्तंभ हज है। हज सामर्थ्य रखने वाले व्यक्ति के लिए जीवन में एक बार मक्का में स्थित पवित्र स्थानों की ज़ियारत करने का नाम है। उन स्थानों की ज़ियारत कुछ विशेष इबादतों के लिए की जाती है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلۡبَيۡتِ مَنِ ٱسۡتَطَاعَ إِلَيۡهِ سَبِيلٗاۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ "तथा अल्लाह के लिए लोगों पर इस घर का हज अनिवार्य है, जो

वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य रखता हो, और जिसने इनकार किया तो निःसंदेह अल्लाह समस्त संसार से निस्पृह (बेनियाज़) है।"[सूरा आल-ए-इमरान : 97]

हज की हिकमतों की बात की जाए, तो इसके द्वारा एकमात्र अल्लाह की इबादत का माहौल बनता है, दिलों में अल्लाह का भय बैठता है, अल्लाह के ज़िक्र की स्थापना होती है, मानव आत्मा को परिष्कृत किया जाता है, मुसलमानों को सही बुनियादों पर एकजुट रहने की तरबियत दी जाती है और इनके अतिरिक्त भी कई लाभ होते हैं।

यहाँ कुछ बातें संक्षिप्त रूप से लिखी गई हैं, वरना इस्लाम के हर स्तंभ की कुछ शर्तें, स्तंभ और बहुत सारा विवरण है।दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

एकीकृत संख्या : 400

प्रश्न संख्या : 49

वज़ू का क्या तरीक़ा है?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : वज़ू का क्या तरीक़ा है?

उत्तर : वज़ू का संपूर्ण तरीक़ा कुछ इस तरह है :

1- इन्सान पवित्रता ग्रहण करने का इरादा करे। नीयत के शब्द ज़बान से उच्चारण न करे, क्योंकि नीयत का स्थान दिल है। अन्य इबादतों की भी यही बात है।

2- बिस्मिल्लाह कहे।

3- फिर दोनों हथेलियों को तीन बार धोए।

4- फिर तीन बार कुल्ली करे। (कुल्ली करने का मतलब है, मुँह में पानी डालकर उसे घुमाना।)तीन बार नाक में पानी डाले और बाएँ हाथ से नाक का पानी झाड़े।अरबी शब्द "الاستنشاق" का अर्थ नाक में पानी डालना और "الاستنثار" का अर्थ नाक से पानी निकालना है।

5- अपने चेहरे को तीन बार धोए। चेहरा लंबाई में सर के बाल उगने के साधारण स्थान से दोनों दाढ़ों एवं ठुड्डी के निचले भाग तक और चौड़ाई में दाएँ कान के किनारे से बाएँ कान के किनारे तक के भाग को कहते हैं।दाढ़ी के बालों को भी धोया जाएगा, क्योंकि ये चेहरे ही का अंग हैं। दाढ़ी के बाल अगर हल्के हों, तो उनके बाहरी एवं भीतरी दोनों भागों को धोना अनिवार्य होगा और अगर घने हों यानी चेहरे के चमड़े को छुपाए हुए हों,

तो केवल उसके बाहरी भाग को धोना होगा और दाढ़ियों में उंगलियां डाल कर ख़िलाल करना होगा।

6- फिर दोनों हाथों को कोहनियों समेत तीन बार धोए। हाथ नाखून समेत उँगलियों के किनारों से बाज़ू के आरंभ होने के स्थान तक को कहते हैं। हाथ में अगर मिट्टी, आटा या पेंट आदि कोई ऐसी चीज़ लगी हो, जो चमड़े तक पानी पहुँचने न देती हो, तो उसे धोने से पहले हटा देना ज़रूरी होगा।

7- फिर इसके बाद नए पानी से अपने सर तथा दोनों कानों का एक बार मसह करे।सर के मसह का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथों को पानी से गीला करके सर के अगले भाग में रखे, फिर उनको गुद्दी तक ले जाए और फिर दोबारा उस स्थान तक ले आए, जहाँ से शुरू किया था। फिर अपनी दोनों तर्जनी उंगलियों को दोनों कानों के सूराखों के अन्दर घुसाए और दोनों अंगूठों से दोनों कानों के बाहरी भागों का स्पर्श करे।रही बात औरत के बालों की, तो बाल चाहे खुले हुए हों या जूड़ा बने हुए, औरत उनका मसह सर के अगले भाग से पिछले भाग के बाल उगने के स्थान तक करेगी। पीठ पर लटके हुए बालों का मसह नहीं करना है।

8- फिर अपने दोनों पैरों को टखनों समेत धोए। टखना पिंडली के नीचे की दोनों उभरी हुई हड्डियों को कहते हैं।

- जिसे पानी न मिल सके, वह तयम्मुम करे। तयम्मुम यानी पानी न मिलने या पानी का इस्तेमाल कर न पाने की अवस्था में ज़मीन के ऊपर की मिट्टी आदि का प्रयोग करना।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ فَلَمۡ تَجِدُواْ مَآءٗ فَتَيَمَّمُواْ صَعِيدٗا طَيِّبٗا فَٱمۡسَحُواْ بِوُجُوهِكُمۡ وَأَيۡدِيكُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَفُوّٗا غَفُورٗا ﴾ "फिर तुम्हें पानी न मिले, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो; उसे अपने चेहरे तथा हाथों पर फेर लो। निःसंदेह अल्लाह माफ करने वाला और क्षमा करने वाला है।"[सूरा अल-निसा : 43]

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि हथेली के भीतरी भाग को एक बार मिट्टी पर मारा जाए तथा चेहरे एवं दोनों हथेलियों के बाहरी भाग का एक ही बार स्पर्श किया जाए। क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अनहु से कहा था :"तुम्हारा लिए इस तरह करना काफ़ी है।" यह कहने के साथ आपने अपने दोनों हथेलियों को ज़मीन पर मारा, फिर उनमें फूँक मारी और उसके बाद उनसे चेहरे और दोनों हथेलियों का मसह (स्पर्श) किया।इस हदीस को बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है

उक्त बातों की दलील उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हुमरान की हदीस है, जिसमें है कि उसमान रज़ियल्लाहु अनहु नेवज़ू का पानी मँगवाया और अपने दोनों हथेलियों को तीन बार धोया, फिर कुल्ली की और नाक झाड़ी, फिर

चेहरे को तीन बार धोया, फिर अपने दाएँ हाथ को कोहनी समेत तीन बार धोया, फिर अपने बाएँ हाथ को इसी तरह धोया, फिर अपने सर का मसह किया, फिर अपने दाएँ पैर को टखनों समेत तीन बार धोया, फिर अपने बाएँ पैर को इसी तरह धोया, फिर फ़रमाया : मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आपने उसी तरह वज़ू किया, जिस तरह मैंने यह वज़ू किया है और उसके बाद आपसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिसने मेरे इस वज़ू की तरह वज़ू किया, फिर दो रकात नमाज़ पढ़ी, तथा उन दो रकातों में अपने आपसे बात नहीं की, उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।"इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

उक्त बातों की दूसरी दलील उच्च एवं महान अल्लाह का यह फ़रमान है : ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا قُمۡتُمۡ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ فَٱغۡسِلُواْ وُجُوهَكُمۡ وَأَيۡدِيَكُمۡ إِلَى ٱلۡمَرَافِقِ وَٱمۡسَحُواْ بِرُءُوسِكُمۡ وَأَرۡجُلَكُمۡ إِلَى ٱلۡكَعۡبَيۡنِۚ وَإِن كُنتُمۡ جُنُبٗا فَٱطَّهَّرُواْۚ وَإِن كُنتُم مَّرۡضَىٰٓ أَوۡ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوۡ جَآءَ أَحَدٞ مِّنكُم مِّنَ ٱلۡغَآئِطِ أَوۡ لَٰمَسۡتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُواْ مَآءٗ فَتَيَمَّمُواْ صَعِيدٗا طَيِّبٗا فَٱمۡسَحُواْ بِوُجُوهِكُمۡ وَأَيۡدِيكُم مِّنۡهُۚ مَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيَجۡعَلَ عَلَيۡكُم مِّنۡ حَرَجٖ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمۡ وَلِيُتِمَّ نِعۡمَتَهُۥ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ﴾ "ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लो और अपने सिरों का मसह (स्पर्श) करो तथा अपने पाँवों को टखनों समेत धो लो। और यदि तुम जनाबत (सहवास के कारण अपवित्रता) की हालत में हो, तो स्नान कर लो। तथा यदि तुम बीमार हो, अथवा यात्रा में हो, अथवा तुममें से कोई शौचकर्म से आया हो, अथवा तुमने स्त्रियों से सहवास किया हो, फिर कोई पानी न पाओ, तो पाक मिट्टी का इरादा करो और उससे अपने चेहरों तथा हाथों पर स्पर्श कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुमपर कोई तंगी करे। लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो।"[सूरा अल-माइदा : 6]दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

एकीकृत संख्या : 3060

प्रश्न संख्या : 50

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा क्या है?

उत्तर :

महत्व / 1

प्रश्न : नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा क्या है?

उत्तर : नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है :

1- इन्सान सबसे पहले पूरे शरीर के साथ क़िबले की ओर मुँह करके खड़ा हो। न शरीर इधर-उधर हटा हुआ हो और न चेहरा।

2- फिर जो नमाज़ पढ़ना चाहता हो, दिल में उसकी नीयत करे। नीयत के शब्द ज़बान से न बोले।

3- फिर तकबीर-ए-एहराम कहे। यानी "الله أكبر" कहे तकबीर कहते समय दोनों हाथों को कंधों तक उठाए।

4- फिर अपने दाएँ हाथ की हथेली को बाएँ हाथ की हथेली पर सीने के ऊपर रखे।

5- फिर नमाज़ आरंभ करने की दुआ पढ़े। नमाज़ आरंभ करने की दुआ कुछ इस तरह है :"ऐ अल्लाह! मेरे तथा मेरे गुनाहों के बीच उतनी दूरी पैदा कर दे, जितनी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के बीच रखी है। ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से साफ़ कर दे, जैसे उजले कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से पानी, बर्फ और ओले से धो दे।"

या फिर यह दुआ पढ़े :"ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, हम तेरी प्रशंसा करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी महिमा उच्च है और तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है।"

6- फिर अल्लाह की शरण माँगते हुए कहे :"मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगता हूँ।"

7- फिर बिस्मिल्लाह कहे और सूरा फ़ातिहा पढ़े। तो कहे :﴿بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ﴾ "अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो अत्यंत दयावान्, असीम दया वाला है।الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ "हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का रब है।الرَّحْمـنِ الرَّحِيمِ जो अत्यंत दयावान्, असीम दया वाला है।مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ जो बदले के दिन का मालिक है।إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ (ऐ अल्लाह!) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से सहायता माँगते हैं।اهدِنَـــا الصِّرَاطَ المُستَقِيمَ हमें सीधे मार्ग पर चला। صِرَاطَ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ غَيرِ المَغضُوبِ عَلَيهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ उन लोगों का मार्ग, जिनपर तूने अनुग्रह किया। उनका नहीं, जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका, जो गुमराह हैं।"[सूरा अल-फ़ातिहा : 1-7]

फिर आमीन कहे। यानी ऐ अल्लाह! ग्रहण कर।

8- फिर जितना हो सके, क़ुरआन पढ़े। सुबह की नमाज़ में लंबी क़िरात करे।

9- फिर रुकू करे। यानी अल्लाह के सम्मान में अपनी पीठ झुकाए। रुकू में जाते समय तकबीर कहे और दोनों हाथों को दोनों कंधों तक उठाए। रुकू का सुन्नत तरीक़ा यह है कि अपनी पीठ को लंबा करके फैला दे, सर को पीठ के बराबर रखे और दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर इस तरह रखे कि उँगलियाँ खुली हुई हों।

11- रुकू में तीन बार यह दुआ पढ़े : "سبحان ربي العظيم" अगर साथ में " سبحانك اللهم وبحمدك، اللهم اغفر لي" भी पढ़ ले, तो अच्छा है।

11- फिर "سمع الله لمن حمده" कहते हुए रुकू से सर उठाए। साथ दोनों हाथों को भी दोनों कंधों के बराबर उठाए। मुक़तदी "سمع الله لمن حمده" न कहे, बल्कि उसकी जगह पर " ربنا ولك الحمد" कहे।

12- फिर सर उठाने के बाद " ربنا ولك الحمد، ملء السماوات والأرض، وملء ما شئت من شيء بعد" कहे।

13- फिर पहला सजदा करे। सजदे में जाते समय "الله أكبر" कहे। सजदा अपने शरीर के सात अंगों; पेशानी, नाक, दोनों हथेलियों, दोनों घुटनों और दोनों क़दमों के किनारों पर करे। दोनों भुजाओं को दोनों पहलुओं से अलग रखे, दोनों हाथों को ज़मीन पर फैलाकर न रखे, उँगिलयों का मुँह क़िबले की ओर रखे।

14- सजदे में तीन बार "سبحان ربي الأعلى" कहे। अगर साथ में " سبحانك اللهم ربنا وبحمدك، اللهم اغفر لي" भी कहे, तो अच्छा है।

15- फिर "الله أكبر" कहते हुए सजदे से अपना सर उठाए।

16- फिर दोनों सजदों के बीच अपने बाएँ क़दम पर बैठे और दायाँ क़दम खड़ा रखे तथा दोनों हाथ दोनों जाँघों तथा दोनों घुटनों पर रखे।

17- दोनों सजदों के बीच की बैठक में यह दुआ पढ़े : " رب اغفر لي، وارحمني، واهدني، وارزقني، واجبرني، وعافني"

18- फिर तकबीर कहते हुए दूसरे सजदे में जाए। दूसरा सजदा भी पहले सजदे ही की तरह करे और उसमें वही दुआ पढ़े, जो पहले सजदे में पढ़ी थी।

19- फिर "الله أكبر" कहते हुए दूसरे सजदे से खड़ा हो और दूसरी रकात पहली रकात ही की तरह पढ़े। अंतर बस इतना है कि दूसरी रकात में नमाज़ आरंभ करने की दुआ नहीं पढ़ेगा।

20- फिर दूसरी रकात पूरी होने के बाद "الله أكبر" कहते हुए ठीक उसी तरह बैठे, जैसे दो सजदों के बीच में बैठा था।

21- इस बैठक में तशह्हुद पढ़े। कहे :"हर प्रकार की महानता, नमाज़ें एवं पवित्र कथन, कर्म एवं गुण अल्लाह ही के लिए हैं। ऐ नबी! आपपर सलामती और अल्लाह की रहमत एवं उसकी बरकत उतरे। हमारे ऊपर तथा अल्लाह के नेक बंदों पर सलामती हो। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।" "ऐ अल्लाह! मुहम्मद और मुहम्मद की संतान पर रहमत उतार, जैसे तूने इबराहीम और इबराहीम की संतान पर रहमत उतारी थी। बेशक तू प्रशंसा के योग्य और महिमावान है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद और मुहम्मद की संतान पर बरकत उतार, जैसे तूने इबराहीम की संतान पर बरकत

उतारी थी। बेशक तू प्रशंसा के योग्य और महिमावान है।" "मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ जहन्नम की यातना से, क़ब्र की यातना से, जीवन तथा मरण के फ़ितने से और काना दज्जाल के फ़ितने से।"फिर दुनिया एवं आख़िरत की भलाइयों से संबंधित जो दुआ चाहे अपने रब से माँगे।

22- फिर "السَّلام عليكم ورحمة الله" कहते हुए पहले अपने दाएँ ओर, और उसके बाद बाएँ ओर सलाम फेरे।

23- नमाज़ अगर तीन या चार रकात वाली हो, तो पहले तशह्हुद के अन्त यानी इन शब्दों को पढ़ने के बाद खड़ा हो जाए :"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं।"

24- फिर "الله أكبر" कहते हुए खड़ा हो जाए और दोनों हाथों को कंधों तक उठाए।

25- फिर शेष नमाज़, दूसरी रकात जिस तरह पढ़ी थी, उसी तरह पढ़े। अंतर बस इतना है कि शेष नमाज़ में केवल सूरा फ़ातिहा पढ़े।

26- फिर तवर्रुक करके बैठ जाए। यानी दाएँ पांव को उठा ले, बाएँ पांव को दाईं पिंडली के नीचे से निकाल दे, नितंब को ज़मीन पर रख दे और दोनों हाथों को दोनों रानों पर उसी तरह रख दे, जिस तरह पहले तशह्हुद में रखा था।

27- इस बैठक में पूरा तशह्हुद पढ़े।

28- फिर "السَّلام عليكم ورحمة الله" कहते हुए पहले अपने दाएँ ओर, और उसके बाद बाएँ ओर सलाम फेरे। दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एकीकृत संख्या : 3070

प्रश्न संख्या : 65

क्या मुसलमान काबा की इबादत करते हैं?

उत्तर :

महत्व /1

प्रश्न : काबा क्या है? क्या मुसलमान काबा की इबादत करते हैं?

उत्तर : काबा शरीफ नमाज़ में मुसलमानों का क़िबला है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَىٰهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُۥ ﴾ "तो निश्चय हम आपको उस क़िबले की ओर अवश्य फेर देंगे, जिसे आप पसंद करते हैं। तो (अब) अपना चेहरा मस्जिद-ए-हराम की ओर फेर लें, तथा तुम जहाँ भी हो,

तो अपने चेहरे को उसी की ओर फेर लो।"[सूरा अल-बक़रा : 144]मुसलमान हज और उमरा अदा करते समय उसकी परिक्रमा (चारों तरफ़ चक्कर लगाना) करते हैं।﴿وَلۡيَطَّوَّفُواْ بِٱلۡبَيۡتِ ٱلۡعَتِيقِ﴾ "और इस प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।"[सूरा अल-हज्ज : 29]

काबा मक्का नगर में स्थित एक पवित्र घर है, जिसे बनाने का आदेश अल्लाह ने अपने नबी एवं दोस्त इबराहीम अलैहिस्सलाम को दिया था। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿وَإِذۡ بَوَّأۡنَا لِإِبۡرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلۡبَيۡتِ أَن لَّا تُشۡرِكۡ بِي شَيۡـٔٗا وَطَهِّرۡ بَيۡتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلۡقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ﴾ "तथा वह समय याद करो जब हमने इबराहीम के लिए इस घर का स्थान निर्धारित कर दिया और उसे आदेश दिया कि किसी को मेरा साझी न बनाना, तथा मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, क़याम करने वालों तथा रुकू' और सजदा करने वालों के लिए पवित्र रखना।"[सूरा अल-हज्ज : 26]

काबा अल्लाह की इबादत के लिए बनने वाला ज़मीन का पहला घर है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :﴿إِنَّ أَوَّلَ بَيۡتٖ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكٗا وَهُدٗى لِّلۡعَٰلَمِينَ﴾ "निःसंदेह पहला घर जो मानव के लिए बनाया गया, वही है जो मक्का में है, जो बरकत वाला तथा समस्त संसार के लिए मार्गदर्शन है।"[सूरा आल-ए-इमरान : 96]

जहाँ तक दूसरे प्रश्न की बात है कि तो मुसलमान न तो काबा की इबादत करते हैं और न हजर-ए-असवद की। वे उनके सामने न तो झुकते हैं और उनसे अनुनय-विनय करते हैं। वे बस उनका एहतराम और सम्मान करते हैं।उनको काबा एवं हजर-ए-असवद से आदेश एवं मनाही प्राप्त नहीं होती। क्योंकि यह दोनों चीज़ें न तो लाभ पहुँचा सकती हैं, न हानि कर सकती हैं। न मार्गदर्शन कर सकती हैं और न निर्देश दे सकती हैं। रही बात इसे चूमने, इसका सम्मान करने और नमाज़ के समय काबा की ओर मुँह करने की, तो यह उनकी एकता एवं एक उद्देश्य के चिह्न हैं। मुसलमान काबा की ज़ियारत और उसका तवाफ़ अल्लाह के आदेश का पालन करने के लिए और एक अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं। यह सब वे काबा के लिए नहीं करते।मुसलमान अच्छी तरह जानते हैं कि हजर-ए-असवद एक पत्थर है। न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि कर सकता है। लेकिन मुसलमान अल्लाह के आदेश का पालन इसलिए करते हैं कि अल्लाह की बंदगी का तक़ाज़ा यही है।

यही कारण है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अनहु ने हजर-ए-असवद को चूमते हुए कहा था :"मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तू एक पत्थर है। न हानि कर सकता है और न लाभ पहुँचा सकता है। अगर मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुझे चूमते हुए न देखता, तो तुझे कभी न चूमता।"इस हदीस को बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया हैदरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

एकीकृत संख्या : 1110

इस्लाम के बारे में प्रचलित प्रश्नों के विश्वकोश से चुने हुए कुछ प्रश्न.....1
(खंड : ईमान के स्तंभ).....1
इस्लाम के पाँच स्तंभ क्या हैं?.....1
वज़ू का क्या तरीक़ा है?.....4
नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा क्या है?.....6
क्या मुसलमान काबा की इबादत करते हैं?.....9